Think
IAS...

दृष्टि
The Vision

Think
Drishti

छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग (CGPSC)

निबंध

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम *(Distance Learning Programme)*

Code: CGPM05

दृष्टि The Vision

छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग (CGPSC)

निबंध

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009

दूरभाष : 8750187501, 011-47532596

टोल फ्री : 1800-121-6260

Web : www.drishtiIAS.com

E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें

www.facebook.com/drishtithevisionfoundation

www.twitter.com/drishtiias

CGPCS DLP

विषय सूची (Contents)

1. निबंध लेखन : क्या, क्यों, कैसे? **5–33**

1.1 निबंध क्या है? 5

1.2 निबंध लिखने की प्रक्रिया और उससे जुड़ी चुनौतियाँ 9

1.3 निबंध लेखन से जुड़े अन्य सुझाव 29

2. निबंधों का संग्रह (शब्द-सीमा लगभग 750) **34–88**

2.1 फैशन-बाज़ार में छत्तीसगढ़ी लोक कला की संभावनाएँ 34

2.2 विकास का वर्तमान प्रादर्श (मॉडल) और छत्तीसगढ़ के आदिवासी 35

2.3 छत्तीसगढ़ में आदिवासी शिक्षा की चुनौतियाँ एवं सरकार की प्रमुख योजनाएँ 36

2.4 भारत की सांस्कृतिक बहुलता और उच्च शिक्षा में पाठ्यक्रम की एकरूपता का प्रश्न 37

2.5 भारत में गिरता हुआ भूजलस्तर और वर्षा जल संचय की संभावनाएँ 38

2.6 जनसंचार माध्यमों का सामाजिक उत्तरदायित्व 39

2.7 विमुद्रीकरण की अवधारणा : चुनौतियाँ और समाधान 40

2.8 भारत में ई-गवर्नेंस का भविष्य : संभावना एवं चुनौतियाँ 41

2.9 भारत के आर्थिक विकास में निजी क्षेत्र की भागीदारी कितनी प्रासंगिक है? 42

2.10 छत्तीसगढ़ की भौगोलिक विविधता और प्रशासनिक चुनौतियाँ 43

2.11 प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और उनके विवेक-सम्मत दोहन की चुनौतियाँ 45

2.12 अंधविश्वास और रूढ़िगत समस्याओं से कराहते छत्तीसगढ़ समाज में 'आधुनिक शिक्षा' की संभावनाएँ 46

2.13 भूमंडलीकरण के दौर में राष्ट्रवाद की अवधारणा 48

2.14 भारतीय ऊर्जा सुरक्षा : चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ 49

2.15 भारतीय संस्कृति और असहिष्णुता का मुद्दा वर्तमान संदर्भ में 50

2.16 छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विरासत में विविध दार्शनिक चिंतन 51

2.17 छत्तीसगढ़ में पर्यटन विभाग एवं विकास का नियोजन 53

2.18 विकासशील छत्तीसगढ़ में जनजातीय संस्कृति या जीवन का संरक्षण और विकास : हकीकत या फसाना? 54

2.19 भारतीय किसान एवं भूमि अधिग्रहण विधेयक : समस्या एवं निवारण 55

2.20 प्राकृतिक आपदा की विभीषिका और पर्यावरण असंतुलन : कारण एवं निदान 57

2.21 कतिपय मशहूर हस्तियों का अपराध एवं भारतीय कानून-व्यवस्था: समस्या एवं निवारण 58

2.22 छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद की समस्या के संदर्भ में 'बंदूक बनाम हल' की अवधारणा 59

2.23 छत्तीसगढ़ के आर्थिक विकास के संदर्भ में कृषि आधारित उद्योगों की संभावनाएँ 61

2.24 छत्तीसगढ़ी समाज में विलुप्त होती लोक संस्कृति की समस्याएँ और उनका निदान 62

2.25 भारतीय समाज में मूल्यों का संक्रमण और यौन हिंसा 63

2.26 उपभोक्ता बाज़ार में 'ब्रांड' और 'आइकॉन' 65

2.27 भारतीय राजनीति में नैतिकता का क्षरण 66

2.28 छत्तीसगढ़ की आर्थिक विषमता : कारण और निवारण 67

2.29 जैविक कृषि के बाज़ार में छत्तीसगढ़ की संभावनाएँ 69

2.30 छत्तीसगढ़ के आदिवासी क्षेत्रों में मानव-तस्करी 70
2.31 जंगल पर किसका अधिकार? 72
2.32 भारतीय सिनेमा और नक्सलवाद 73
2.33 आदिवासी समाज की प्रकृति से घनिष्ठता उसे शेष विश्व से आगे ले जाती है। 74
2.34 बैलेट पर बुलेट का ज़ोर छत्तीसगढ़ को कहाँ ले जाएगा? 76
2.35 वनोत्पादों के केंद्रीय बाज़ार के रूप में छत्तीसगढ़ की संभावनाएँ 77
2.36 आदिवासियों को आधुनिक शिक्षा की उतनी ज़रूरत नहीं, जितना आधुनिक समाज को आदिवासी जीवन मूल्यों की है। 78
2.37 रोज़गार विहीन संवृद्धि भारतीय अर्थव्यवस्था का एक संदिग्ध सत्य है। 79
2.38 आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता 80
2.39 केवल उधार देना ही नहीं, उधार की वसूली भी वित्त है। 82
2.40 आरक्षण की मौलिक संकल्पना और आर्थिक आधार पर आरक्षण का औचित्य 84
2.41 आर्थिक असमानता समाज में असहयोगी चिंताधारा का निर्वहन करती है। 86
2.42 भारत की मौलिक एकता के सूत्र 87

अध्याय
1

निबंध लेखनः क्या, क्यों, कैसे?
(Essay Writing: What, Why, How?)

निबंध लिखना विद्यार्थी जीवन की सबसे कठिन चुनौतियों में से एक है। पढ़ाई चाहे विद्यालय स्तर की हो, कॉलेज स्तर की या प्रतियोगी परीक्षाओं के स्तर की, निबंध लेखन की चुनौती विद्यार्थियों के सामने बनी ही रहती है। कई विद्यार्थियों के मन में यह सहज सवाल उठता है कि आखिर उनसे निबंध क्यों लिखवाया जाता है? निबंध को पढ़कर कोई उनके मानसिक स्तर या व्यक्तित्व का मूल्यांकन कैसे कर सकता है? और अगर कर सकता है, तो उन्हें एक बेहतरीन निबंध कैसे लिखना चाहिये?

इस लेख के माध्यम से हम ऐसे ही कुछ प्रश्नों को सुलझाने की कोशिश करेंगे। विश्वास रखिये कि निबंध लेखन की कला कोई जन्मजात कला नहीं है, इसे कठोर अभ्यास से निश्चित तौर पर साधा जा सकता है। अगर आप भी ठान लेंगे कि आपको प्रभावशाली निबंध लेखक बनना है तो एक-दो महीनों के निरंतर और रणनीतिक अभ्यास से आप निश्चय ही इस सपने को साकार कर लेंगे।

1.1 निबंध क्या है?

सबसे पहले हम यही समझने की कोशिश करते हैं कि एक विधा के रूप में निबंध क्या है और यह अन्य विधाओं से कैसे अलग है? 'विधा' शब्द शायद आपको नया लग रहा होगा। इसका अर्थ साहित्य, संगीत या कला की विशेष शैलियों से होता है। उदाहरण के लिये, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, लेख और समीक्षा विभिन्न विधाओं के उदाहरण हैं। किसी विधा में उतरने से पहले बेहतर होता है कि उसके चरित्र को ठीक से समझ लिया जाए। मुझे विश्वास है कि अगर आपको निबंध विधा की ठीक समझ होगी तो निबंध लेखन की प्रक्रिया में आप अपना सतत् मूल्यांकन भी कर सकेंगे और प्रभावशाली निबंध भी लिख सकेंगे।

कुछ लोग मानते हैं कि निबंध एक प्राचीन भारतीय विधा है जिसका मूल संस्कृत साहित्य में खोजा जा सकता है। यह बात सही है कि संस्कृत में 'निबंध' नाम की एक विधा मौजूद थी जिसमें धर्मशास्त्रीय सिद्धांतों की विवेचना की जाती थी। इस विधा में लेखक पहले अपने से विरोधी सिद्धांतों को चुनौती के तौर पर पेश करता था और फिर एक-एक करके अपने तर्कों, प्रमाणों की मदद से उन सभी सिद्धांतों को ध्वस्त करता था। चूँकि इस विधा में प्रमाणों का 'निबंधन' किया जाता था, इसीलिये इसका नाम 'निबंध' पड़ गया था।

सवाल यह है कि आज हम जिसे निबंध कहते हैं, वह यही विधा है या उससे अलग? इसका सामान्यतः प्रचलित उत्तर है कि आज का निबंध अपने चरित्र और स्वरूप में संस्कृत के 'निबंध' पर नहीं बल्कि अंग्रेज़ी के 'Essay' पर आधारित है। अतः निबंध विधा को समझने के लिये हमें आधुनिक यूरोपीय साहित्य की पृष्ठभूमि का अनुसंधान करना चाहिये।

माना जाता है कि एक आधुनिक विधा के रूप में 'निबंध' की शुरुआत 1580 ई. में फ्राँस के लेखक मॉन्तेन (Montaigne) के हाथों हुई। मॉन्तेन ने अपने निबंधों के लिये 'एसे' (Essay) शब्द का प्रयोग किया जिसका अर्थ होता है- 'प्रयोग'। उस समय फ्राँस में कहानी, नाटक, कविता जैसी कई विधाएँ प्रचलित थीं पर निबंध का कलेवर उन सबसे अलग था। इसमें कहानियों की तरह न तो विभिन्न चरित्र/पात्र थे और न ही घटनाएँ। नाटक में कहानी के साथ-साथ दृश्य और मंच की भी बड़ी भूमिका होती है, पर निबंध में यह सब भी नहीं था। अगर कविताओं से तुलना करें तो उनमें छंद, तुक और लय जैसे ढाँचे उपस्थित होते हैं जो रचनाकार को एक बुनियादी फ्रेमवर्क उपलब्ध करा देते हैं; पर निबंध में ये भी नहीं थे क्योंकि निबंध पद्य (Poetry) में नहीं, गद्य (Prose) में था।

स्पष्ट है कि निबंध इन सभी विधाओं से अलग था। एक अर्थ में यह सबसे कठिन विधा के रूप में उभरा क्योंकि इसमें पाठक को बांधकर रखना सबसे मुश्किल काम था। यह मुश्किल इसलिये था क्योंकि इसमें मनोरंजन पैदा करने के

अध्याय
2

निबंधों का संग्रह

(शब्द-सीमा लगभग 750)

2.1 फैशन-बाज़ार में छत्तीसगढ़ी लोक कला की संभावनाएँ

CGPCS (Mains) 2017

देश में लोककलाओं की खुशबू आज भी अपनी प्राचीन परंपराओं से समृद्ध है। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी एक विशिष्ट संस्कृति एवं परंपरागत पहचान है जो वहाँ प्रचलित कलाओं में स्पष्टत: दृष्टिगोचर होती है। इससे उनकी समृद्धशाली विरासत का अंदाज़ा लगाया जा सकता है।

छत्तीसगढ़ का जनजातीय क्षेत्र हमेशा अपने लोकनृत्यों के लिये विश्वप्रसिद्ध रहा है। विभिन्न अवसरों पर कलाकार परिवार, क्षेत्र, भाषा, जाति, लिंग तथा धर्म में ऊपर उठकर इसे व्यापक स्वरूप प्रदान करते हैं। पन्थीनृत्य, करमा, मंदारी, सरहुल, दशहरा तारा, ढाँदर विल्मा, डण्डारी राउत आदि कुछ प्रमुख लोक नृत्य हैं। जबकि रहस, ककसार, पण्डवानी, नाचा दहिकांदो, भरतनाटा आदि छत्तीसगढ़ के प्रमुख लोकनाट्य हैं।

अपने परंपरागत सौंदर्य भाव एवं प्रामाणिकता की कारण यहाँ के लोककलाओं की अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में संभावना बहुत प्रबल है। इन कलाओं द्वारा ग्रामीण धार्मिक एवं आध्यात्मिक स्वरूपों का चरित्र किया जा सकता है। इन प्रदेशों में बने मिट्टी के बर्तन तो अपनी विशिष्ट एवं परंपरागत सौंदर्य के कारण विदेशी पर्यटकों के बीच बेहद लोकप्रिय हैं। छत्तीसगढ़ की जनजातीय कला ग्रामीण इलाकों की उस सृजनात्मक क्षमता को प्रतिबिंबित करती है जो जनजातीय लोगों को शिल्पकारिता के लिये प्रेरित करती है।

आजकल हस्त-निर्मित उत्पादों को फैशन एवं विलासिता की वस्तु माना जाता है। हस्तशिल्प परंपरावादी कारीगरों की सांस्कृतिक पहचान हैं। अन्य शिल्प कलाओं में काष्ठशिल्प, मिट्टीशिल्प, धड़वा कला, पत्ता कला, कंघी कला आदि प्रमुख हैं।

जब लोकप्रिय शिल्पों को बाज़ार की मांग के अनुरूप संशोधित किया जाता है तो यह वाणिज्यिक शिल्प बन जाते हैं।

विषम परिस्थिति के बीच अपनी पहचान स्थापित करना तथा उसे कायम रखना किसी भी कलाकार के लिये एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। वर्तमान समय में आधुनिकीकरण एवं बाज़ारीकरण की दौड़ में हम अपनी संस्कृति एवं लोककलाओं से कहीं-न-कहीं अलग होते जा रहे हैं। कला को विकसित करने के लिये यह नितांत आवश्यक है कि उनके प्रति श्रद्धा का भाव रखा जाए तथा प्रकृति से जीवंत संबंध बनाया जाए। यह अत्यंत दुख की बात है कि जिस देश की परंपरा अत्यंत उच्च स्तर की कलात्मक प्रवृत्तियों वाली थी वहाँ कलाओं का समन्वय मुख्य जीवन से टूटता जा रहा है। छत्तीसगढ़ी लोक कलाओं में भी पौराणिक संस्कृति एवं कलाओं की झलक मिलती है।

उपयोगी वस्तुओं का निर्माण कम व्यय से भी हो सकता है इस तथ्य को स्वीकार किये जाने के साथ लोक कलाओं को प्रतियोगी भी होना होगा। कलाकारों पर सृजनशीलता का बहुत दबाव बढ़ गया है। छत्तीसगढ़ के कलाकारों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन का अवसर प्राप्त हो रहे हैं। कलाकारों की पहचान व सम्मान के लिये 'चिन्हारी' कार्यक्रम शुरू किया गया है। बाकी जहाँ तक बात है प्रौद्योगिकी द्वारा मानव क्षमताओं को विस्थापित करने की, तो अभी यहाँ उसका प्रभाव कम है। फिर भी इसके प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है।

छत्तीसगढ़ की लोककला मनोरंजन, सौंदर्य प्रवाह, उल्लास, न जाने कितने तत्त्वों से यह भरपूर है जिसमें मानवीयता को सम्मोहित करने की शक्ति है। छत्तीसगढ़ की लोककला भारत के बाहर भी अपनी जड़ें विस्तृत कर रही है।

प्रतिस्पर्द्धा का बढ़ता स्तर लोक-कलाकारों को कठिन मेहनत करने की प्रेरणा प्रदान करता है। कलाकारों को रचनात्मक एवं मौलिक होना पड़ेगा क्योंकि वर्तमान युग बाज़ार का युग है और बाज़ार में वही टिकेगा जो बिकेगा। चमक कम पड़ने पर प्रतियोगिता से बाहर भी जा सकते हैं। चीन अपनी स्थानीय प्रतिभा एवं कौशल के बल पर ही विश्व स्तर पर उभर कर कड़ी

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी तथा फ्लोचार्ट का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 8750187501, 011-47532596